



# मौत का पहाड़

शब्द: गायत्रीमदन दत्त  
चित्र: राम वाईरकेव

इचिरो और चिरो दो भाई थे।  
दिन-भर वे अपने खेतों में  
काम करते थे।



शाम को जब वे घर लौटते,  
उनकी मां सुमी मुस्कराते  
हुए उनका स्वागत करती  
थी।



आओ, मेरे बेटों,  
भोजन तैयार है।

पर कुछ दिनों से इचिरो और चिरो  
उदास रहने लगे थे...



और वे अक्सर खिड़की में से, दूर, कुहरे से  
घिरे पहाड़ की ओर देखा करते थे।

70 वर्ष के होते ही सब बूढ़ों को उनके बेटे इसी  
पहाड़ पर ला कर छोड़ जाया करते थे।



यह नियम उस राज्य के राजा ने बनाया था।  
इसके पीछे विचार यह था कि जब बूढ़ों में  
योग्यता और ताकत खत्म हो जाती है, वे  
परिवार और समाज पर बोझ बन जाते हैं।

इस नियम में यह बात भुला दी  
गयी थी कि बूढ़े लोग अपना वर्षों  
का अनुभव और ज्ञान अपने बच्चों  
को दे सकते हैं।



और एक शाम, सुमी ने अपने बेटों  
से कहा -

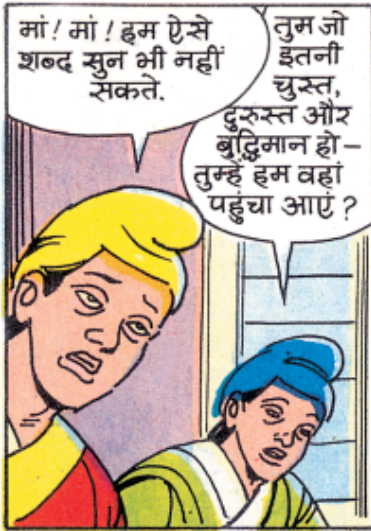
मेरे बच्चों, आज पूर्णिमा सी है।  
आज मैं 70 वर्ष की हो गयी।  
अब इस राज्य के नियम के  
अनुसार...



...कल तुम मुझे  
उस पहाड़ पर  
पहुँचा आओ, जहाँ  
से कोई लौट कर  
नहीं आता।



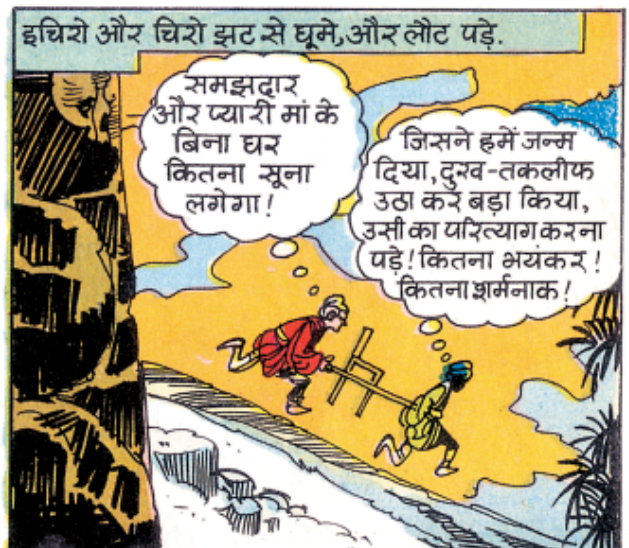




मेरे बच्चो,  
कानून से तुम कैसे लड़ोगे ?



कोई चारा न था...





अंधेरा हो चला था और बर्फ भी गिरने लगी थी। उतावली में, भाइयों ने छोटे रास्ते से नीचे उतरने का फैसला किया।



अचानक, बर्फ के फाहे घने होने लगे और जोरदार तूफान शुरू हो गया।



और निराश हो कर वे वापस पहाड़ की चोटी की ओर दौड़ पड़े।



बर्फ से सुन्न होकर, अधमरी-सी सुमी झाड़ियों के पीछे पड़ी थी। पर उसमें घेतना आयी...



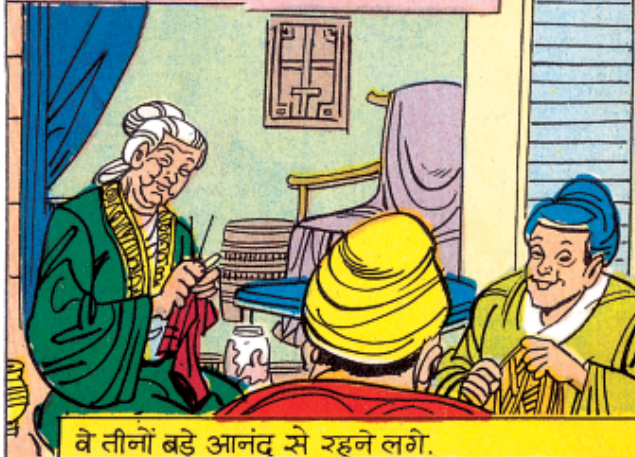
इचिरो और चिरो ने उसे डोली में बैठाया और घर ले चले



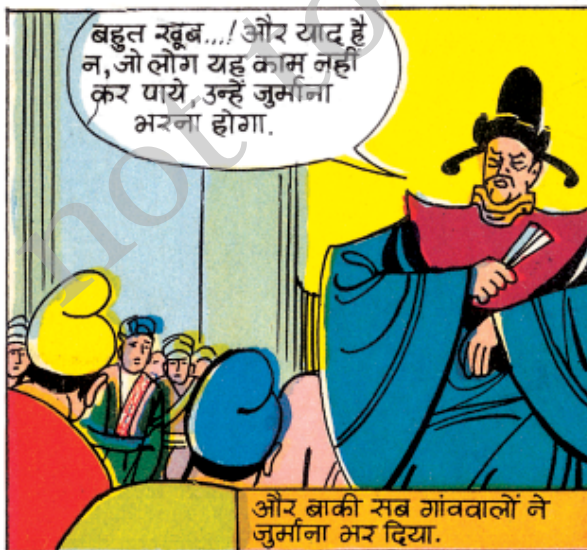
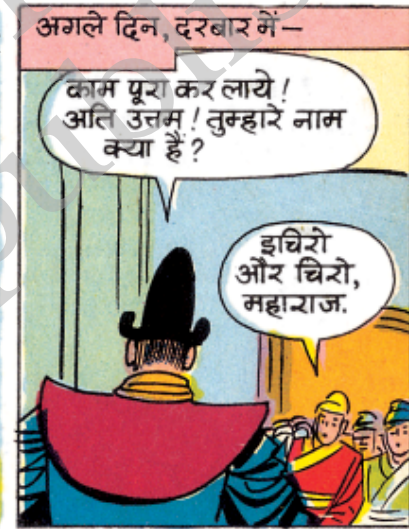
...और उनका घर आ गया।



इचिरो और चिरो ने सुमी को झोपड़ी के पिछले हिस्से में छिपा दिया, ताकि गांववालों और सिपाहियों को उसका पता न चले।



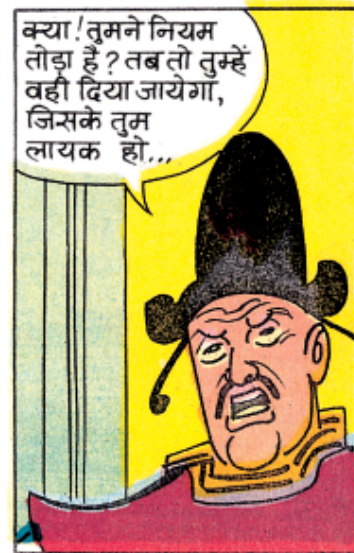
















...क्योंकि अब किसी अभागे बेटे को अपने प्यारे मां-बाप को वहाँ छोड़ने नहीं आना पड़ता.